हिंदी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा: एक अनुचिंतन

डॉ० सुमिता गड़कोटी

सहायक प्रोफेसर हिंदी

एस.एस.जे.डी.डब्लू.एस.एस. एस. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

रानीखेत (अल्मोड़ा) उत्तराखंड।

शोधसार

श्रीमद्भगवद्गीता एवं योग सूत्र के सजीव भाष्य,मंत्रों के उपदेष्टा,विश्ववंदनीयराष्ट्रपितामहामना महात्मा गांधी की विराट व्यक्तित्व संचेतना और महिमाशालीकृतित्वने संपूर्ण जनजीवन औरउसके जीवन दर्शन को न केवल प्रभावित किया वरन उसके अंतस मेंसदानुभूतियोंकी जागृति कर निरंतर तीन दशकों तक स्वतंत्र यज्ञ का समायोजन कर परतंत्र देश की राजनीतिक,आर्थिक,धार्मिक,सामाजिक परिस्थितियों में जो आमूल चूल परिवर्तन उपस्थित किया वह वैश्विकइतिहास की अभूतपूर्व घटना है।उन्होंने मानव सभ्यता केअंतसमें देश की जागृतिकेमंत्रपिरोतेहुएसंपूर्ण भारतीयसंस्कृति को स्वतंत्र राष्ट्र समर्पित कर निःसंदेह देश के विकासक्रम में नए अध्याय का श्रीगणेश किया है।युगशिल्पी महामना गांधी जी के विचारों के दर्शन से न केवल भारतीय संस्कृति आप्लावित रही है अपितु संपूर्ण हिंदी साहित्य भी उनके सत्य,ज्ञान और अहिंसा के विचारों से उत्प्रेरित रहा है।उनके जीवन दर्शन की ऊर्जा ने संपूर्ण हिंदी जगत को सतत प्रेरणाकाआलोक प्रदान किया है।जितनी विराट उनके व्यक्तित्व की संचेतना है उतना ही व्यापक साहित्य पर उनका प्रभाव है।

निश्चित ही गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हिंदी साहित्य हमारी अपराजित स्वतंत्रता की जययात्रा का उद्घोष है।इस विचारधारा का प्रत्येक खंड आत्मशक्ति को लेकर चलने वाला है।जिस कारण उसमें एक प्रकार की आध्यात्मिकता और

विचार स्वातंत्र्यता भी समाहित है।गांधीवादी विचारधारा सत्य की साधना का विज्ञान है।उसकी समस्त प्रवृत्तियां ब्रह्म में उसके दृढ़ विश्वास से उद्भूत हुई हैं।यह ब्रह्म सर्वद्रष्टा,सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है।जिसकी अभिव्यक्ति हिंदी साहित्य में स्पष्ट रूप से परिरक्षित होती है।अतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि,हिंदी साहित्य गांधीवादी विचारधारा का प्रतिबिंब है।

शब्द कुंजी:- हिंदी साहित्य, गांधीवाद,विचारधारा, अनुचिंतन, समाज, संस्कृति, महात्मागॉधी।

आलेखप्रस्तुति

गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव आधुनिक युग में एक सर्वव्यापी प्रभाव बनकर रहा है।डॉ सुधीन्द्र के अनुसार "भारत का स्वराज्य आंदोलनतिलक और गांधी की पथप्रदर्शिता में जिस ऊंचे आध्यात्मिक स्तर पर संचालित हुआ उसका पूर्ण स्वरूप तत्कालीन कविताओं में प्रतिबिंबित हुआ है"। हिंदी का कोई कवि अथवा लेखकहोगाजोइससेअछूता रहा होगा।हिंदी काव्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव देखकर डॉ नगेंद्र कहते हैं-"गांधी दर्शन हमारा युगदर्शन है और इसके सर्वव्यापी प्रभाव से आधुनिक कवि अछूते नहीं रह सकते हैं।वस्तुतः गांधीजी राष्ट्रीयता और संस्कृति के उन्नायक महापुरुष के रूप में अवतरित होतेहैंउनकी मूल प्रेरणा से ओतप्रोत होकरसंपूर्ण साहित्य राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक क्षमताओं को धारण करने वाला होता है"।सत्य ही गांधी जी ने किसी नवीन दर्शन की नींव न डालकर भारतीय संस्कृति के अमर तत्वों को ही नवयुग के परिप्रेक्ष्य में विश्व मानवता के लिए प्रस्तुत किया है।उन्होंने अपने सिद्धांतों का केवल उपदेश अथवा प्रचार मात्र नहीं किया वरन अपने निजी जीवन में उन्हें क्रियात्मक रूप देकर विश्व के सामने अद्भुत आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है।उन्होंने भारत की राजनीतिक,आर्थिक,सामाजिक तथा धार्मिक सभी स्थितियों को सुधारने के लिए जो

प्रयास किया उसमें भारतीयता एवं मानवता का स्वर मुखरित हुआहै,जो स्पष्ट सुनाई देता है।गांधी जी के इस विराट व्यक्तित्व के सर्वतोमुखी प्रभाव को व्यक्त करते हुए फूलचंद पांडे लिखते हैं-"सचमुच गांधी वह पारस पत्थर है जिसे छूकर न जाने कितने ही हाड़-मांस के पुतले स्वर्ण शक्ति पा सकेंगे।उसने नव समाज के लिए आदर्श जीवन बताया,साहित्य में एक जागरण की शक्ति दी,राजनीति में विश्व नीति का रूप स्थित किया,समाज को उदार बनाया,व्यक्ति को सचेत किया तथा मानवसमष्टि को उन्मुख तथा प्रगति पथ की ओर बढ़ाया"।

यदि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विचार विमर्श किया जाए तो आधुनिक भारतीय साहित्य का विकास, पुनरुत्थान नवजागरण की पृष्ठभूमि में हुआ।भारतीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान का एक सशक्त पक्ष आधुनिक भारतीय साहित्य में युगांतर है।विविध भाषाओं के होने पर भी उसमें आश्चर्यजनक साम्य परिलक्षित होता है।जिस प्रकार मध्यकाल में भक्ति का स्वर सबसे ऊपर था,उसी प्रकार आधुनिक काल में राष्ट्रीयता का स्वर सबसे ऊंचा रहा है।पुनरुत्थान, नवजागरण और राष्ट्रीयता यह तीनों परस्पर एक दूसरे के पूरक रहे हैं और एक के अनुबंध में ही दूसरे का स्पष्टीकरण संभव भी है।यदि पुनरुत्थान का संबंध धर्म से है तो नवजागरण का संबंध संस्कृति से है और राष्ट्रीयता का संबंध आर्थिक सामाजिक प्रगति से है।लेकिन फिर भी राष्ट्रीयता के उन्नयन में सभी का समावेश हो जाता है।डॉ नगेंद्र कहते हैं-"20वीं सदीकेपूर्वार्ध में संपूर्ण भारतीय साहित्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य की यह धारा अनंत कल्लोलों के साथ प्रभावित होती रही है।तमिल के भारतीय,मलयालम के वल्लतोल, गुजराती के उमाशंकरजोशी,मराठी के केशवसुत तथा गोविंदाग्रज,हिंदी के मैथिलीशरण गुप्त,पंत,नवीन, दिनकर आदि उर्दू के चकबस्त,पंजाबी के गुरुमुखसिंह,मुसाफिर,हीरासिंह दर्द आदि ने काव्य में विभिन्न भंगिमाओं के साथ इस स्वर को मुखरित किया है।कर्म के क्षेत्र में गांधीजी ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक वातावरण तैयार किया था।उसका लाभ इन समस्त कवियों ने ग्रहण किया"।

द्विवेदी युग गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव के आरंभ का युग था।इस समय सामूहिक चेतना की जागरूकता का आविर्भावहुआ।राष्ट्र के लिए मर मिटने की भावना,गांधी विचारधारासे प्रेरित अहिंसक राष्ट्रीय भावना,मानवतावादी दृष्टिकोण आदि राष्ट्रीयता के नए रूप इस युग में उभर करसामने आए।इस युग की राष्ट्रीयता प्रमुख रूप से राजनीतिक रही।इस काल में देश के राजनीतिक आंदोलनों ने वस्तुतः जनआंदोलन अर्थात पूर्ण अर्थ में राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ग्रहण किया।इसी जन आंदोलन को इस युग की कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति प्राप्त हुई।साहित्य के प्रत्येक स्वर मेंगांधीवादी विचारधारा का समावेश होता चला गया।इस युग में भारत की प्रशस्ति में अपनी भावनाओं को शब्दों में पिरोते होते हुए श्रीधर पाठक कहते हैं-

"जयजयभारतहे,

उन्नतभालविराजितचारूहिमालयहै।

प्रनतपयोधिप्रसर्पितपदतृणअंचलहै"।

भारत के लिए प्रशस्ति गीतों को लिखने में सबसे अग्रस्वर पाठक जी का ही था।रामनरेश त्रिपाठी, मैथिली शरण गुप्त आदि ने अपनी प्रसिद्ध कविताओं में भारत माता की भव्य झांकियां प्रस्तुत की हैं।सत्यनारायण,काविरत्न आदि कवियों ने भी अपने काव्य में मातृभूमि की वंदना की अभिव्यक्ति की है।

भारत की वर्तमान समस्याओं से चिंतित होकर गांधी जी के विचारों में अपने भारतवर्ष के अतीत के प्रति गौरवपूर्ण भावनाओंकीस्मृतियांसदा ही समाहित रही हैं।उनकी इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर अतीत के प्रति गौरवपूर्णविचारों की अनुभूतियों में खोकर भारत की वर्तमान समस्याओं के प्रति चिंतन को उद्धृत करने वाले कवियों में श्रीधर पाठक,नाथूराम शर्मा,देवी प्रसाद पूर्ण,रामनरेश त्रिपाठी,मैथिली शरण गुप्त आदि कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कियाहै।शोषित समाज की समस्या को उजागर करते हुए केशव प्रसाद मिश्र अपनी कविता के माध्यम से कहते हैं कि,

"सिर पर सदा घास का बोझा,
तन पर नहीं एक भी सूत,
हाय हायकंपित होता है,
जाड़े से भारत का पूत"।

गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव के फलस्वरुप जन जन में निरंतर मानवतावादी विचारधारा का विकास होने लगता है।हरिऔध की राधिका देश सेविका का रूप ग्रहण कर लेती है और गुप्त जी के राम मानवता को ईश्वरता में बदलते दिखते हैं-"राम तुम मानव हो,ईश्वर नहीं हो क्या?"इस प्रकार गांधीवादी विचारधारा के व्यापक प्रभाव के फलस्वरुपद्विवेदी युग की यही विचारधारा छायावादी युग में भी अपने प्रौढ़ और परिष्कृत रूप में नृत्य करती हुई दिखाई देती है।

इस युग के कवियों ने महात्मा गांधी द्वारा प्रभावित होकर अहिंसक राष्ट्रीयता और सत्याग्रह को स्वर प्रदान करना आरंभ कर दिया था। विजय पर्व की भावना कवियों में अदम्य उत्साह को जन्म देने लगी थी।सत्याग्रह के स्वरूप से ओतप्रोतहोकर माधव शुक्ल अपनी कविता के माध्यम से कहते हैं कि,-

"हैशक्ति सत्याग्रह अमोघ,अजेय है अविवाद है,
इस विश्व में विमुक्त रहा,इसका सदा जयनाद है"।।

न केवल गांधी जी की विचार भूमि हिंदी साहित्य को आकार प्रकार देने वाली थी,बल्कि गांधी जी का एक-एक वक्तव्य कवियों को प्रभावित कर उनके हृदय में स्वदेशी भावना को समाहित करने वाला था।गांधी जी के इस कथन ने कि,"इस रावण राज्य में श्रृंगार छोड़ दो,जब तक देश परतंत्र है तब तक ऐशो-आराम को शोकाग्नि में भस्म कर दो" ने हिंदी कवियों को अत्यधिक प्रभावित किया।तथा उन्हें देश प्रेम की भावनाओं से जोड़ दिया।

गांधीवादी विचारधारा के दर्शनभारतेंदु युग और द्विवेदी युग में पूर्णता को प्राप्त होते हैं तथा छायावादी और छायावादोत्तर युग की कविताओं में गांधीवादी विचारधारा अपने चरम उत्कर्ष के साथ समाहित होती है।सन 1920 के पश्चात

साहित्य में होने वाले परिवर्तन को देखते हुए आचार्य वाजपेई जी कहते हैं कि,"एक पीढ़ी समाप्त हो रही थी और दूसरी का उदय हो रहा था।नए के आगमन का पूर्वाभास और पुराने की विदाई की विलंबित छाया,कभी-कभी कुछ वर्षों का समय घेर लेती है।इस कारण इस नए युग का आगमन और पुराने युग के अवसर की तिथि निर्धारित करने में कुछ कठिनाइयां भी उत्पन्न हो जाती हैं।परंतु सन 1800,1900 में समाप्त होने वाले प्रथम महायुद्ध और सन 20 के आसपास भारतीय राजनीति में गांधी जी का प्रवेश,दो ऐसे स्मारक हैं जिनके आधार पर इन्हीं वर्षों को नए साहित्यिक उन्मेष की प्रवर्तक तिथि मान लेने में किसी प्रकार की शंका नहीं होती"।

गांधीयुगमें अनेक प्रवृत्तियां साहित्य के अंतर्गत परिलक्षित होती हैं।जिनमें छायावाद,स्वच्छंदतावाद,राष्ट्रीयतावाद,व्यक्तिवाद,अहंवाद,मानवतावाद और प्रगतिवाद प्रधान हैं।इस युग के सभी प्रमुख कवियों ने प्राचीन भारतीय दर्शन का अध्ययन मनन किया और भक्तिकालीन कवियों में कबीर,मीरा तथा जायसी से भी प्रभाव ग्रहण किया।गांधी जी ने भी भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों का समन्वय करके उन्हें जीवन में व्यवहृत करने का प्रयत्न किया।अतः उनके दर्शन का भी कवियों पर बहुत अधिक गहरा प्रभाव पड़ा।

छायावादी कवि निराला के काव्य में नवीन भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि का आलेखन हुआ है।उन्होंने राष्ट्रीय नवजागरण की नई चेतना स्फूर्ति और प्रेरणा का अनुकूल वातावरण उपस्थित किया। महाकवि पंत का दृष्टिकोण बराबर सांस्कृतिक और सामाजिक उत्थान का रहा। वह कहते हैं-

"राजनीति का प्रश्न नहीं रे आज जगत के सम्मुख,
एक वृहत्सांस्कृतिक समस्या जग के निकट उपस्थित"।

महात्मा गांधी के प्रति लिखी गई सुमित्रानंदन पंत की कविताएं अत्यधिक मार्मिक एवं प्रभावपूर्ण हैं।बापू पर कोई महाकाव्य अथवा स्वतंत्र पुस्तक न लिखकर इस युग के कवियों ने अनेक मानवीय आदर्शों को अपने काव्य में चित्रित करने का

प्रयत्न किया है।जिसमें भाव प्रवणता एवं गहराई निहित है।एक ओर छायावादके प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद ने कामायनी के द्वारा गांधीवादी विचारधारा को अभिव्यक्त किया,तो दूसरी ओर महादेवी वर्मा ने संस्मरण तथा अनेक लेखों के माध्यम से युगीन चिंतन को अभिव्यक्त किया है।जयशंकरप्रसादनेअपने अपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास इरावती में युग धर्म का भी संकेत किया है।अहिंसा का पुरुषता के साथ,कला का विलासिता से उद्धार करके वह शक्ति और आनंद की स्थापना करना चाहते थे।महादेवी वर्मा ने भी गांधी जी के 21 दिनों के मृत्युंजय पर्व को अपने काव्य के माध्यम से अंकित किया है।सियारामशरणगुप्तजीकीगांधीवादी करुणा मूलक राष्ट्रीयता भी इसी युग की देन है।उन्मुक्त,आत्मोत्सर्ग,बापू आदि कविताओं में यह धारा स्पष्ट परिलक्षित होती है।प्रस्तुतकविता में उनकीगांधीवादी विचारधारा के तात्विक दर्शन मिलते हैं -

"हिंसानल से शांत नहीं होता हिंसानल
हिंसा का है एक अहिंसा ही प्रत्युत्तर"।

माखनलालचतुर्वेदीकीरचना"एक भारतीय आत्मा",मेंजोआत्म बलिदान की प्रेरणा से युक्त भावना का उत्कर्षहैवहभी इसी युग में दृष्टिगोचर होता है।इस बलिपंथी राष्ट्रीय कवि ने अपनी कविताओं द्वारा राष्ट्र की अंतर आत्मा में प्राण फूंकने का सफल प्रयत्न किया है और राष्ट्र को एक नई भावना "बलिदान का महत्व" प्रदान किया।सुभद्रा कुमारी चौहान की नारी सुलभ कोमलता और प्रकल्प भावनाओं से युक्त सामाजिक राष्ट्रीयता का योगदान भी इसी युग के राष्ट्रीय काव्य को उपलब्ध होता है सहयोग और बलिदान की भावना को अभिव्यक्त करते हुए वह कहती हैं -

"विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र,
पाप से असहयोग ले ठान,
गुंजा डाले स्वराज की तान,
और सब हो जाए बलिदान"।।

इस प्रकारछायावाद युग की काव्य संपदा में गाँधी विचारधारा से प्रभावित कवितायें अमूल्य निधि के रूप में आज भी सुरक्षित हैं। उनमें आज भी वही वैशिष्ट्यसमाहित है, जो पूर्व में था।वो आज भी राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र जागृति और राष्ट्रभक्ति से अनुप्राणित होकर जन-जनके हृदय को अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित होने की शिक्षा देती हैं।

इस प्रकार छायावादोत्तर काव्य की दो दिशाएं महत्वपूर्ण रही हैं। एक ओर छायावाद की त्रुटियों के मार्जन का प्रयत्न साहित्य में परिलक्षित होता है, तो दूसरी और उसमें नवीन परिस्थितियों से उत्पन्न अनुभूति एवं मनोदशा की अभिव्यक्ति भी प्रकट होती है। युग की नियामक शक्ति, मान्यताओं तथा आदर्श में इस युग की राष्ट्रीय कविता को एक नया आवरण और उजली हुई रूपरेखा समर्पित की। गांधीवादी विचारधारा के आदर्शों से प्रभावित छायावाद युग की राष्ट्रीय भावना इस युग में भी अपने बलिदान की भावना के को लिए हुए पूरे वेग से प्रवाहित होती रही है। परिणाम स्वरुप नए राष्ट्रीय स्वरूप के साथ-साथ पुराने स्वर भी इस युग में अपनी संपूर्ण समग्रता से ध्वनित होते रहें हैं। निश्चय ही कवियों द्वारा इस नवीन युग में राष्ट्रीयता के प्रबल रूपों को अपने काव्य में अभिव्यांजित किया गया है। पहला रूप गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कविताओं का है, जिसमें बलिदान एवं अहिंसा की प्रधानता है। दूसरा रूप कविता के समाजवादी और मार्क्सवादी आदर्श की भूमिका में पनपता उपक्रम प्रतीत होता है और तीसरे प्रकार की कविता में क्रांति पथ परिलक्षित होता है। क्रांति का आवाहन और उसका स्वागत करने वाली इन कविताओं में केवल नाश की ही अभिव्यक्ति हुई है। संतुलित तथा ठोस भूमिका पर पहले प्रकार की कविता युग का प्रमुख स्वर था अथवा प्रमुख धारा बनी। युग के प्रमुख कवियों द्वारा पल्लवित होकर उसने युगीन भूमिका को समर्थता के साथ निभाने का उपक्रम किया।

छायावादोत्तरयुग में विविध कवियों ने मार्कस्वाद का अनुकरण करते हुए अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति की। लेकिन फिर भी सभी पर गाँधीजी की

सात्विकविचारधारा का स्थायी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। समस्त कवियों ने अपनी विविध कविताओं में युगांतकारी सिद्धांतों को स्वीकार कर उनका संदेश जन-जनतक पहुंचाने का सफल प्रयास किया है।ऐसा कोई कलाकार, लेखक या कवि न होगा जिसने इस निःशस्त्र, निर्भीक, सेनानी, मानवता के अवतार, युग पुरुष का अपने काव्य द्वारा अभिषेक न किया हो।नरेंद्रशर्मा जैसे कवियों ने 'लाल रूस का दुश्मन','साथी','दुश्मन सब इंसानों का' आदि साहित्य के माध्यम से गांधीवादी विचारधारा के प्रति अपनी भावनाओं और अपनी श्रद्धा को अभिव्यक्त किया है। साम्यवाद के पोषक कवि नरेंद्रशर्माबापू की जनहित भावना को महत्वपूर्ण बताते हुए सेनानी की सात्विक शक्ति का प्रभाव दिखाते हुए कहते हैं कि,-

"जनहित के लिए देव तुमने,
क्या नहीं सहा? क्या नहीं किया?
सौबार हारकर,सेनानी तुम अपराजित।
जय और पराजय के सुख-दुख से,
नहीं युद्ध की गति शासित,
क्या इसीलिए, मृदु पल्लव का लोहा,
बज्रों ने मान लिया"।

कविवरशिवमंगल सिंह सुमन मार्कस्वाद के प्रति विशेष प्रेम रखने के पश्चात भी बापू के महिमाशाली व्यक्तित्व तथा उनके असामान्य कृतित्व से प्रभावित होकर दानवीवृत्तियों के विष को पी लेने वाले नीलकंठ राष्ट्रपिता गाँधी को लक्ष्य कर विकल वाणी से कहते हैं-

"हे नीलकंठ पीगए गरल,
हिंसा,ईर्ष्या, छल, दंभ,
अंध-दानवता की दूधिया हँसी,
घोरही पाप मानवता के,
जन-जनकण-कण की व्यथा कथा से,

पल-पल मर्माहत जर्जर,

छलनी हो गया हाय-अंतर,

ऊमस दावा लू-लपटों से,

झुलसे प्राणी जब जब तरसे,

हेकरुणाधन तुम कहाँ नहीं कब-कब बरसे"।।

इस प्रकार छायावादोत्तर हिंदी साहित्य में भी गांधीवादी विचारधारा की दर्शन पग-पग पर दृष्टिगोचर होते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि, हिंदी कविता पर आच्छादितगांधीवादी विचारधारा का जो गहरा प्रभाव है वह अन्यत्र कहीं नहीं। पूर्व गांधीयुगीनद्विवेदी काल से लेकर गांधीयुगीनछायावाद तथा छायावादोत्तर काल तक के विशाल काव्य राशि पर गांधीवादी विचारधारा का व्यापक और चिरस्थायी प्रभाव पड़ा है। यदि ये कहा जाए कि सन्1920 से लेकर आज तक की कविताओं में गाँधीजी की भावनाओं, उनके दर्शन, उनके मनोभावों, उनके आदर्शों, उनके मन्तव्यों को हिंदी कविता में बखूबी देखा जा सकता है तो ये है अतिशयोक्ति न होगी।निश्चितहीआधुनिक युग के कवि किसी न किसी रूप में गांधीवादी विचारधारा से, उनके आदर्शों से प्रभावित रहेहैं। उनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, मानवीयता, परोपकार, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वाभिमान एवं एकता आदि विभिन्न विचारों के दर्शन होते हैं।उनके भावों की विचार-विथियां देखने को मिलती हैं।गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित होकर ही इन कवियों की कल्पनाशक्ति ने अंबर का स्पर्श कर लियाहै। संक्षेप में कह सकते हैं कि, समाज और साहित्य दोनों पर इस विचारधारा का अमिट प्रभाव अंकित है। साहित्य में रामकाव्य तथा कृष्ण काव्य के समान ही गांधीवादी विचारधारा से अनुप्राणित होकर हिन्दीसाहित्य की प्रत्येक पंक्ति, उसका प्रत्येक शब्द अद्भुत परम्परा से मंडित हो गया है। अतः

कविता के साथ साथ साहित्य की अन्य विधाओं पर भी गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव सूक्ष्मता के साथ देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गाँधी विचार दोहन : किशोरी लाल घनश्याम मशरूवाला, छठवां प्रकाशन 1953
2. सत्याग्रह मीमांसा: रंगनाथ दिवाकर, अनुवादक बाबूरामजोशी,प्रथमसंस्करण 1949
3. गांधीवाद समाजवाद एक तुलनात्मक अध्ययन- हिंदी प्रकाशन मंदिर इलाहाबाद 1953
4. गांधीजी क्या चाहते थे? : निर्मल कुमार वसु, अनुवादक मदनलाल जैन, प्रथम संस्करण 1958
5. युद्ध और अहिंसा: महात्मा गाँधी 1941
6. गाँधी साहित्य 1, प्रार्थना प्रवचन, खंड एक द्वितीय संस्करण, 1953
7. आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ: डॉ नगेंद्र, प्रथम संस्करण, 2008
8. नया हिंदी साहित्य एक भूमिका: प्रकाश चंद्र गुप्त,चतुर्थ संस्करण, 1953
9. हिंदी साहित्य के 80 वर्ष:शिवदान सिंह चौहान, 1954